श्री बगलामुखी पूजन विधान (षोडशोपचार पूजन)
Sri Baglamukhi Pujan Vidhan (Shodshopchar Pujan)

Sri Yogeshwaranand Ji & Sumit Girdharwal Ji
9540674788,9410030994
shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info, www.yogeshwaranand.org

शास्त्रों में देवी-देवताओं को प्रसन्न करने हेतु उपासना-विधियों में सर्वोत्तम उपासना-विधि उनके षोडशोपचार पूजन को माना गया है। षोडशोपचार पूजन का अर्थ होता है– सोलह उपचारों से पूजन करना। सोलह उपचार निम्नवत् कहे गए हैं–

(1) आवाहन (2) आसन (3) पाद्य (4) अर्घ्य (5) स्नान (6) वस्त्र (7) यज्ञोपवीत (8) गन्ध (9) पुष्प तथा पुष्पमाला (10) दीपक (11) अक्षत (चावल) (12) पान-सुपारी-लौंग (13) नैवेद्य (14) दक्षिणा (15) आरती (16) प्रदक्षिणा तथा पुष्पाञ्जलि।

इन उपचारों के अतिरिक्त पांच उपचार, दश उपचार, बारह उपचार, अट्ठारह उपचार आदि भी होते हैं। लेकिन यहां 16 उपचारों की पूजन- सामग्री एवं उनका विधान अंकित किया जा रहा है। सामग्री को पूजा से पहले अपने पास रख लेना चाहिए। यहां सामग्री में हवन की सामग्री भी लिखी गयी है। यदि केवल पूजन ही करना हो तो वांछित सामग्री का चयन साधक अपनी सुविधा तथा उपलब्धता के अनुसार करके एकत्र कर लें।

पूजन-सामग्री

सिन्दूर, श्रृंगी अथवा अभिषेक पात्र , रोली अथवा कुंकुम, अक्षत, बिल्व-पत्र, सफेद तिल, श्वेत चन्दन, गिलास, माँ बगला का चित्र या मूर्ति, थाली , सिंहासन,कटोरा ,पंचपात्र ,जौं, घण्टी (गरुड़ के चित्र वाली न हो), केला, आरती-स्टैण्ड , मिठाई, कम्बल या कुशा का आसन, हल्दी की माला, दीपक, पीले रंग के भगवती के वस्त्र व आभूषण आम की चौकी अथवा पटरी, केले के पत्ते, पूजन की पुस्तक, दूर्वा (हरी कोमल घास), शंख, गंगाजल रुई, केसर, माचिस, पीले कनेर-पुष्प, कच्चा दूध, तुलसी पत्र, दही, शहद, शुद्ध घी, इलायची, पंचमेवा,

पंचरत्न, आम के पत्ते, मौली (कलावा), हवन-सामग्री, रोली, यज्ञोपवीत (जनेऊ), कलश, फल, कलश के लिए पीला कपड़ा, पीले रंग में रंगे हुए अक्षत्, सूखा गोला (नारियल), आम की सूखी लकड़ी, दो वस्त्र (पुरोहित व यजमान के लिए), गोरोचन, खीर, मीठा सुगन्धित पान, कर्पूर, मोदक (लड्डू), काजल (सुरमा), केवड़ा, चामर, एक थाली भोजन

उद्वर्तन– मैदा, हल्दी व चमेली का तेल।

अर्घ्य– पीले पुष्प, अक्षत, जौं, दूब, चार तिल, कुशा का अग्रभाग तथा पीली सरसों।

आचमन– जायफल, लौंग, कंकोल का चूर्ण।

पूजन के लिए एक आम की चौकी अथवा पटरी रख लें। उसके चारों कोनों पर केले के पत्ते लगा लें। चौकी (बाजोट) पर पीला कपड़ा बिछाकर उस पर भगवती की प्रतिमा या चित्र अथवा यन्त्र स्थापित कर लें। उसके पश्चात् अपने पीले कपड़े या कुशा के आसन पर पूर्व- अथवा उत्तर-मुखी होकर बैठ जाएं।

तदोपरान्त दाहिने हाथ की अंजुलि में साधारण जल या गंगाजल लेकर निम्नांकित मन्त्र पढ़कर अंजुलि का जल अपने शरीर पर छिड़कें। इससे शरीर को पवित्र किया जाता है।

ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।

य स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तर शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षं पुनातु॥

इसके बाद शिखा-बन्धन करके दीपक व धूपबत्ती जलाकर दीपक पूजन करें और दीपक की लौ में भगवती बगला के ज्योतिर्मय रूप की भावना करें।

दीप-पूजन– ॐ दीप ज्योतिषे नमः। बोलकर दीपक के समक्ष जल, अक्षत्, पुष्प, चन्दन, बिल्वपत्र चढ़ाएं।

इसके उपरान्त आचमन करें–

ॐ केशवाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। बोलकर जल अपने होठों से लगाएं। इसके बाद निम्नांकित मन्त्र बोलकर हाथ में जल लेकर हाथ धो लें।

ॐ हृषिकेशवाय नमः।

तदोपरान्त अपने आसन के नीचे हल्दी या जल से त्रिकोण बनाएं और आसन-पूजन करके पृथ्वी से अनामिका उंगली लगाकर प्रतीकात्मक रूप से तिलक करें। फिर गुरु-मन्त्र, गणेश-मन्त्र जप करके संकल्प लें।

संकल्प

कोई भी अनुष्ठान करने से पूर्व संकल्प लिया जाता है जिसका ज्ञान होना प्रत्येक साधक के लिए अनिवार्य है।

("ॐ तत् सदद्य परमात्मन् आज्ञया प्रवर्तमानस्य अमुक .... संवत्सरस्य श्री श्वेतावाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे अमुक .... प्रदेशे अमुक नगरे अमुक .... स्थाने अमुक .... मासे अमुक पक्षे .... अमुक वासरे .... अमुक गोत्रोत्पन्न .... (नाम) अहं श्री भगवत्याः पीताम्बरायाः प्रसादसिद्धि द्वारा मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थं (न्यायालये अस्मत् पक्षे विजयार्थं, नाना ग्रहोपग्रह प्रयोगं, नाना दुष्टरोग शान्त्यर्थे, शीघ्रं आरोग्यलाभार्थं, सर्व दुष्ट बाधा, कष्ट ग्रह उच्चाटनार्थे, श्री भगवती पीताम्बरा प्रीत्यर्थे .... यथाशक्ति यथाज्ञानेन यथासम्भावितोपचार द्रव्यैः सांगावरणैः श्री भगवती पीताम्बराः सपर्या जपे करिष्ये।")

(अमुक के स्थान पर सम्बन्धित नामों का उच्चारण करना चाहिए।)

संकल्प के बाद हाथ की सामग्री भगवती के समक्ष अथवा भूमि पर छोड़ दें। इसके बाद भगवती का ध्यान करें (हाथ में एक पीला पुष्प लेकर)–

ध्यान

गम्भीरां च मदोन्मत्तां तप्तकाञ्चनसन्निभाम्।
चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम्॥१॥
मुद्गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च वज्रकम्।
पीताम्बराधरां सान्द्रदृढपीनपयोधराम्॥२॥
हेमकुण्डलभूषां च पीतचन्द्रार्धशेखराम्।
पीतभूषणभूषां च स्वर्णसिंहासने स्थिताम्॥३॥
एवं ध्यात्वा च देवेशीं शत्रुस्तम्भनकारिणीम्।
महाविद्या महामायां साधकेष्टफलप्रदाम्॥४॥
ह्रीं बगलायै स्वाहा।
ॐ ब्रह्मास्त्र विद्यायै स्वाहा॥
ॐ ब्रह्मास्त्र-स्तम्भिनी विद्यायै स्वाहा॥
ॐ प्रवृत्ति रोधिनी विद्यायै स्वाहा॥
ॐ षट्-कर्माधार विद्यायै स्वाहा॥

और फिर नमस्कार करेंगे–

ॐ बगलायै नमः॥
ॐ पीताम्बरायै नमः॥

नोट– यहां हमने साधकों की सुविधा हेतु पूजन श्लोकों के साथ 'श्रीसूक्त' का भी समन्वय किया है, जिससे भगवती बगला का लक्ष्मी रूप में भी पूजन सम्पन्न हो जाता है। अर्थप्राप्ति और भगवती की प्रसन्नता हेतु यह एक उत्तम विधान है।

सर्वप्रथम भगवती पीताम्बरा का आवाहन करें–

आवाहन–

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह॥
आत्मसंस्थां प्रजां शुद्धां त्वामहं परमेश्वरीम्।
अरण्यामिव हव्याशं मूर्तिमावाहयाम्यहम्॥

"श्री पीताम्बरायै नमः आवाहनं समर्पयामि" कहकर 'आवाहिनी मुद्रा' का प्रदर्शन करें।

आसन– हाथ में छः पुष्प लेकर निम्नांकित श्लोक-पाठ करें–

तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥
सर्वान्तर्यामिनि देवी सर्वबीजमये शुभे।
स्वात्मस्थमपरं शुद्धमासनं कल्पयाम्हम्॥

"श्री पीताम्बरायै नमः आसनं समर्पयामि" बोलकर भगवती के समक्ष 'स्थापिनी मुद्रा' का प्रदर्शन करें। मानसिक रूप से उन्हें आसन दें।

सान्निध्य–

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।

श्रियं देवीमुपह्वये श्रीमां देवी जुषताम्।।

अनन्या तव देवशि मूर्त्तिशक्तिरियं प्रभो।

सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्तानुग्रहतत्परे।।

"श्री पीताम्बरायै नमः। श्री पीताम्बरे इह सन्निधेहि सन्निधेहि" बोलकर भगवती के समक्ष 'सन्निधापिनी मुद्रा' का प्रदर्शन करें।

पाद्य– (पाद्य में चन्दन, पीतपुष्प, अक्षत, पीली सरसों व गंगाजल होते हैं) मन में भावना करें कि आप भगवती के चरणों एवं हाथों का धौ रहे हैं

कां सोऽस्मिता हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।

पद्मे स्थितां पद्मवर्णा तामिहोपह्वये श्रियम्।।

गंगादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतम्।

तोयमेतत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

"श्री पीताम्बरायै नमः पाद्यं समर्पयामि" बोलकर भगवती को पाद्य अर्पित करें। फिर "श्री पीताम्बरे इह सन्निरूद्धा भव सन्निरूद्धा भव" बोलकर 'सन्निरोधिनी मुद्रा' का प्रदर्शन करें।

अर्घ्य– पीले पुष्प, अक्षत, जौं, दूब, चार तिल, कुशा का अग्रभाग तथा पीली सरसों।

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।

तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।

गंधपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।

गृहाण त्वं महादेवी! प्रसन्ना भव सर्वदा।।

"श्री पीताम्बरायै नमः अर्घ्य समर्पयामि" बोलकर भगवती को अर्घ्य प्रदान करें।

आचमन– भगवती को कर्पूर मिला जल आचमन के लिए प्रदान करें। उसमें जायफल, लौंग तथा कंकोल का चूर्ण भी मिलाएं–

आदित्य वर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।

तस्या फलानि तपसा नुदन्तु या अंतरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्।

तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वरी।।

"श्री पीताम्बरायै नमः आचमनं समर्पयामि।"

स्नान– गंगाजल में केसर व गोरोचन मिलाएं तथा मन्त्र पढ़कर भगवती को प्रदान करें–

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।

प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देवि! स्नानार्थं प्रतिग्रह्यताम्।।

"श्री बगलायै नमः स्नानं समर्पयामि।"

दुग्ध स्नान– गाय के दूध में केसर मिलाकर भगवती को स्नानार्थ प्रदान करें–

क्षुप्तिपासामलां ज्येष्ठां अलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥
कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं या हेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

"श्री पीताम्बराय नमः दुग्धं स्नानं समर्पयामि।"

दधि-स्नान– गाय के दूध से बनी दही से भगवती को स्नान कराएं–

पयसस्तु समुद्रभूतं मधुराम्लं शशीप्रभाम्।
दध्यानीतं महोदवि! स्नानार्थं प्रतिगह्यताम्॥

"श्री पीताम्बरायै नमः दधिस्नानं समर्पयामि।"

घृत-स्नान– गाय के दूध से बने घी से भगवती को स्नान कराएं–

नवनीत समुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

"श्री पीताम्बरायै नमः घृत स्नानं समर्पयामि।"

मधु स्नान– शुद्ध शहद से भगवती को स्नान कराएं–

पुष्परेणु समुत्पन्नं सुस्वादुं मधुरं मधु।
तेजः पुष्टि समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

"श्री पीताम्बरायै नमः मधुस्नानं समर्पयामि।"

शर्करा स्नान–

इक्षुसार समुद्भूतं शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

"श्री पीताम्बरायै नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि।"

पञ्चामृत स्नान–

पयोदधि घृतं चैव मधुं च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

"श्री पीताम्बरायै नमः पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि।" (अलग पात्र में रखे पञ्चामृत से स्नान कराएं।)

गंधोदक स्नान–

मलयाचल सम्भूतं चन्दनागरूमिश्रितम्।
सलिलं देवदेवेशि! शुद्ध स्नानाय गृह्यताम्॥

"श्री पीताम्बरायै नमः गंधोदक स्नानं समर्पयामि।" गंध मिला जल अर्पित करें।

शुद्धोदक स्नान–

शुद्धं यत् सलिलं दिव्यं गंगाजलसमं स्मृतम्।
समर्पितं मया भक्त्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

"श्री पीताम्बरायै नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।" (शुद्ध जल से स्नान कराएं।)

वस्त्र तथा उपवस्त्र–

पट्टकूलयुगं देवि! कञ्चुकेन समन्वितम्।
परिधेहि कृपां कृत्वा मातः श्री बगलामुखी॥

“श्री पीताम्बरायै नमः वस्त्रं-उपवस्त्रं समर्पयामि।”

गंध–

गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं च देवेशि! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

“श्री पीताम्बरायै नमः गन्धं समर्पयामि।” (भगवती को चन्दन अर्पित करें।)

सौभाग्यसूत्र–

सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणिसंयुतम्।
कण्ठे वध्नमि देवेशि! सौभाग्यं देहि मे सदा॥

“श्री पीताम्बरायै नमः सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि।” इस मन्त्र से महामाया को सौभाग्यसूत्र अर्पित करें।

अक्षत– हल्दी से रंगे अक्षत, जो संख्या में सौ से अधिक हों, भगवती को समर्पित करें–

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीःश्रयतां यशः॥
अक्षतान् निर्मलान् शुद्धान् मुक्ताफल समन्वितान्।
गृहाणेमान् महादेवि! देहि में निर्मलां धियम्॥

“श्री पीताम्बरायै नमः अक्षतान् समर्पयामि।”

हरिद्रा–

हरिद्रारञ्जिता देवी! सुखसौभाग्यदायिनी।
तस्मात्त्वां पूजयाम्यत्र दुःख शान्ति प्रयच्छ में॥

“श्री पीताम्बरायै नमः हरिद्रां समर्पयामि।” (बोलकर भगवती को हरिद्रा-चूर्ण अर्पण करें।)

कुंकुम–

कुंकुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसंभवम्।
कुंकुमेनार्चिते देवी! प्रसीद बगलामुखि!॥

“श्री पीताम्बरायै नमः कुंकुमं (रोली) समर्पयामि।”

सिंदूर–

सिंदूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम्।
पूजिताऽसि मया देवि! प्रसीद बगलामुखि!॥

“श्री पीताम्बरायै नमः सिंदूरं समर्पयामि।”

कज्जल–

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे! शान्तिकारके!॥
कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरी॥

“श्री पीताम्बरायै नमः कज्जलं (काजल) समर्पयामि।”

पुष्प-पुष्पमाला–

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥
मंदारपरिजातादिपाटलकेतकानि च
जातीचम्पक पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने॥
पद्मशंखजपुष्पादि शतपत्रैर्विचित्रिताम्।
पुष्पमालां प्रयच्छामि ते श्री पीताम्बरे! शिवे॥

"श्री पीताम्बरायै नमः पुष्पं पुष्पमालां समर्पयामि।"

धूप–

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय में कुले॥
वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।
आघ्रेय सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिग्रह्यताम्॥

"श्री पीताम्बरायै नमः धूपमाघ्रपयामि।" (इससे भगवती को धूप दें।)

दीप–

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्य शोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूति करे प्रसीद् मह्यम्॥
आज्यं न वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेशि! त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

"श्री पीताम्बरायै नमः दीपं दर्शयामि।"

नैवेद्य तथा ऋतुफल–

आर्द्रां पुष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो मआवह॥
अन्नं चतुर्विधं स्वादुःरसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्ति में ह्यचलां कुरु॥

"श्री पीताम्बरायै नमः नैवेद्यं ऋतुफलं च निवेदयामि।"

ताम्बूल–

तां माऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥
एलालवंगकस्तूरीकर्पूरैः पुष्पवासिताम्।
वीटीकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि!॥

"श्री पीताम्बरायै नमः मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि।" (भगवती को पान का बीड़ा अर्पण करें।)

दक्षिणा–

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।

सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥
पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि।
स्थापितं ते च प्रीत्यर्थं पूर्णान् कुरु मनोरथान्॥

"श्री पीताम्बरायै नमः द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।" (इस मन्त्र से भगवती को यथाशक्ति द्रव्य दक्षिणा प्रदान करें।)

पुष्पाञ्जलि–

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥
नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो ग्रहाण परमेश्वरि!॥

"श्री पीताम्बरायै नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।"

नीराजन (आरती)–

इसके उपरान्त भगवती की आरती करें।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरर्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदा भव॥

"श्री पीताम्बरायै नमः कपूरारर्तिक्यं समर्पयामि।"

प्रदक्षिणा–

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणे पदे पदे॥

"श्री पीताम्बरायै नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।" (इस मन्त्र से भगवती की परिक्रमा करें।)

प्रार्थना

उपर्युक्त कृत्यों के उपरान्त भगवती से हृदय की गहराइयों से प्रार्थना करें–

ॐ यद् दत्तं भक्तिमात्रेण पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
निवेदितं च नैवेद्यं तद् गृहाणाऽनुकम्पया॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजामर्चां न जानामि त्वं गतिः परमेश्वरि॥
कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम।
अन्तश्चारेण भूतानां दृष्टी त्वं परमेश्वरि॥
मातर्योनिसहस्रेषु येषु येषु व्रजाम्यहम्।
तेषु तेष्वचला भक्तिरव्ययाऽस्तु सदा त्वयि॥
देवी दात्री च भोक्त्री च देवी सर्वमिदं जगत्।
देवी जयति सर्वत्र या देवी साऽहमेव च॥
"ॐ रश्मिरूपा महेशान्याश्चात्र पूजितदेवताः।
पीताम्बरांगे लीनास्ताः सन्तु सर्वं सुखावहा॥
ॐ तिष्ठ तिष्ठ परंस्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि।

यत्र ब्रह्मादयो देवाः सुरास्तिष्ठन्ति मे हृदि॥
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्।
तत् सर्वं क्षम्यतां देवी प्रसीद परमेश्वरि॥"

इस प्रकार भगवती से क्षमा प्रार्थना करने के उपरान्त आचमनी से जल छोड़ते हुए– **"अनया पूजया श्री महामाया बगलामुखी प्रियताम्। ॐ तत्सत्"** बोलकर भगवती को दण्डवत् प्रणाम करें, आसन के नीचे जल डालकर माथे से लगाएं और आचमन करके आसन से उठकर, आसन उठाकर पवित्र स्थान पर रखें और अपना निजी कार्य करने हेतु उद्यत हों।

(शास्त्रोक्त एवं गुरु-परम्परा पर आधारित)

हमारी प्रकाशित पुस्तकें -

1 श्री बगलामुखी तंत्रम (RS - 400)

ISBN - 9789352884773, 9352884779

2 श्री प्रत्यंगिरा साधना रहस्य (RS - 400)

ISBN - 9789352885497, 935288549X

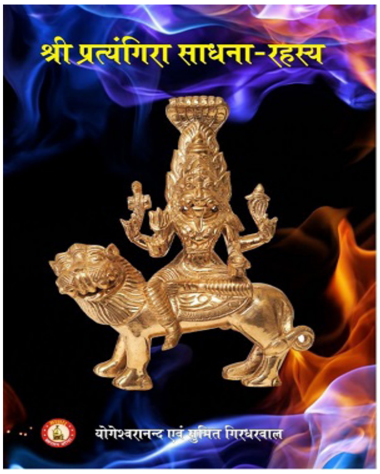

3 आगम रहस्य (तन्त्रोक्त साधनाऐं) (RS - 500)

ISBN - 9789382171676, 9382171673

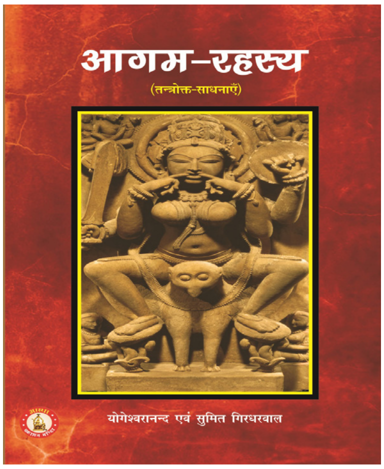

4 षट्कर्म विधान (RS - 380)

ISBN - 9789382171669, 9382171665

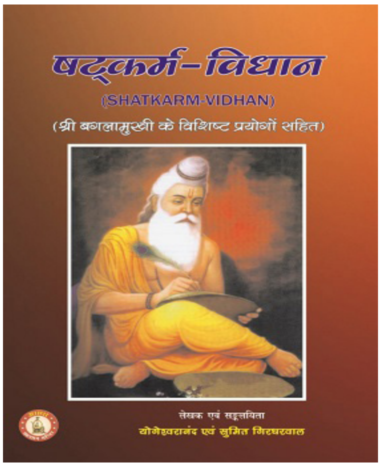

5 षाडशी महाविद्या (RS - 370)

ISBN - 9788182838017, 8182838010

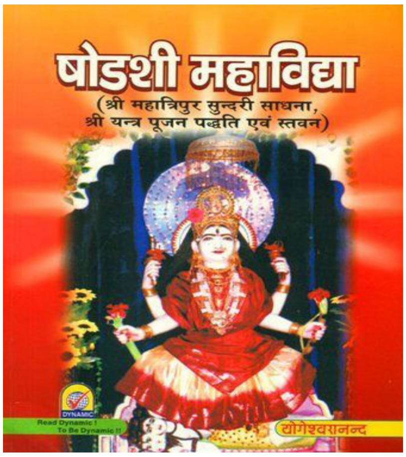

Sri Yogeshwaranand Ji, Mo -9540674788, shaktisadhna@yahoo.com, www.baglamukhi.info

6 मंत्र साधना (RS - 280)

ISBN 9788179331910, 8179331911

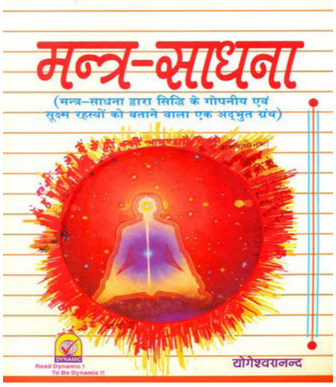

7 महाविद्या श्री बगलामुखी साधना रहस्य (RS - 350)

ISBN 9788182838000, 8182838002

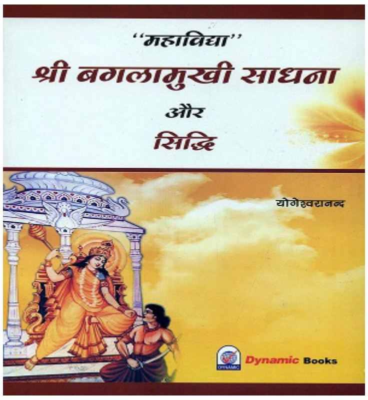

आगामी पुस्तकें -

1 अघोरी (वामाचार साधना रहस्य)

ISBN 9789352887842, 9352887840

2 यंत्र साधना

ISBN 9789352885091, 9352885090

आप जो भी पुस्तक प्राप्त करना चाहते हैं उसका मूल्य हमारे नीचे लिखित खाते में जमा कराकर हमें सूचित करें -

Astha Prakashan Mandir
Axis Bank (Current Account)
917020072807944
IFSC Code – UTIB0001094
Branch - Main Branch Baghpat (U.P.) pin 250609